प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

कोई तुम्हारे प्रति सच्चा रहे इसकी अपेक्षा दूसरों से मत करो। यह मत सोचो कि क्योंकि तुम निष्कपटता चाहते हो तो लोग इस बात को स्वीकार कर लेंगे कि वे कब तुम्हारे साथ ईमानदार नहीं हैं। यही है मानव-स्वभाव। सृष्टि के प्रकट होने के बहुत पहले ही इसे सृष्टि के हर स्नायु में अंकित कर दिया गया था। यह ब्रह्माण्ड के कोने-कोने में विद्यमान है। परन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेम की ओर बढ़ने की तुम्हारी यात्रा में रुकावट आनी चाहिए। तुम्हारे अन्दर यह सुनिश्चित करने की पूरी-पूरी सामर्थ्य है कि तुम्हारा अन्तर-केन्द्रण और तुम्हारा बाह्य-केन्द्रण अविचल रहे।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।